झुलसा से बचाना है तो बोएं नीलकंठ, संगम, चिप्सोना आलू

बोआई को उपयुक्त 6.8 पीएच वाली दोमट व बलुई दोमट भूमि, 24-25 डिग्री सेल्सियस तापमान रहने पर अच्छा होता है जमाव

जागरण संवाददाता, फर्रुखाबाद : वैसे तो जनपद में सबसे अधिक बोई जाने वाली आलू की किस्म कुफरी बहार है, जिसे आम भाषा में बहार '3797' कहा जाता है। हालांकि कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक जनपद की जलवायु और रोग प्रतिरोधक क्षमता की दृष्टि से नीलकंठ, संगम या चिप्सोना बहार बेहतर विकल्प है। इनमें अगेती व पिछेती झुलसा रोग से भी लड़ने की क्षमता अन्य प्रजातियों की अपेक्षा काफी बेहतर है। वहीं पिछेती फसल वाले किसानों के लिए कुफरी बहार व कुफरी गंगा प्रजाति बेहतर विकल्प है।

चंद्र शेखर आजाद कृषि विश्व विद्यालय के जनपद में संचालित कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानी डा. संजय कुमार बताते हैं कि आलू शीतोष्ण जलवायु की फसल है। इसकी खेती रबी ऋतु में की जाती है। आलू की बेहतर फसल के लिए 15-20 डिग्री सेल्सियस तापमान और 6.8 पीएच वाली दोमट व बलुई दोमट भूमि उपयुक्त है। प्रति हेक्टेयर 25-30 किलोग्राम बीज को तीन प्रतिशत बोरिक एसिड में 25 से 30 मिनट तक शोधित कर बोआई करना चाहिए। बोआई के समय 24-25 डिग्री सेल्सियस तापमान रहने पर जमाव अच्छा होता है। आलू की बेहतर फसल के लिए 20-25 टन सड़ी गोबर की खाद व 180 किलो नाइट्रोजन, 100 किलो फास्फोरस, 120 किलो पोटास, पांच किलो बोरान व 35 किलो जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

डा. संजय कुमार। जागरण

डा. संजय कुमार बताया कि कुफरी चिप्सोना 1, 2 व 3 फर्रुखाबाद जैसे मैदानी क्षेत्र के लिए बेहतर है। यह किस्म पिछेती झुलसा रोग प्रतिरोधी है। चिप्स व फ्रेंच-फ्राई के लिए उपयुक्त है। कुफरी चिप्सोना-4 को लंबे समय तक भंडारित रखा जा सकता है। कुफरी फ्राइसोना की भी भंडारण क्षमता अच्छी है। इस के कंद फ्रेंच-फ्राइज बनाने के लिए उपयुक्त हैं। कुफरी बहार अगेती प्रजाति है। पिछेती झुलसा के प्रति संवेदनशील है। कुफरी ख्याति अगेती व मध्यम अवधि वाली किस्म है। इसमें अगेती और पिछेती झुलसा का असर कम होता है। आलू खनने की प्रक्रिया जल्दी शुरू हो जाती है। कुफरी पुखराज भी अगेती-मध्यम अवधि वाली किस्म है। झुलसा के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। यह उच्च फसल

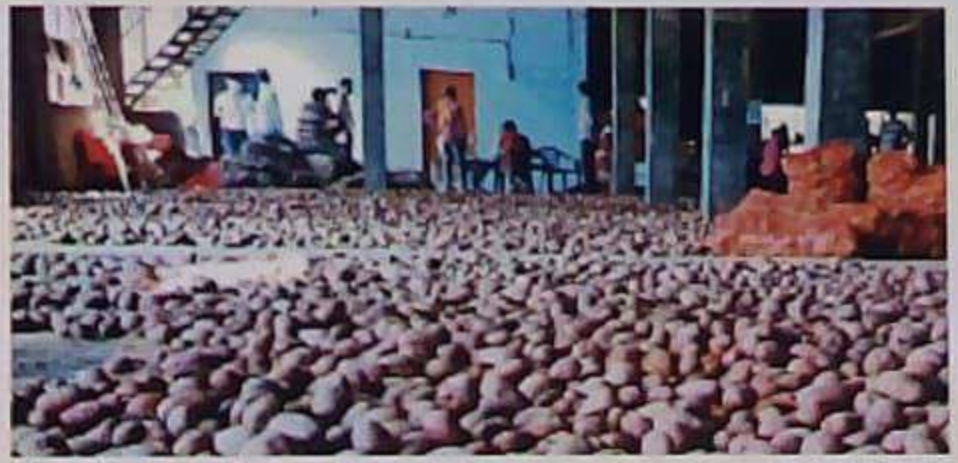

कोल्ड स्टोरेज में बीज के लिए निकाला गया आलू। जागरण

उत्पादकता के लिए उपयुक्त है। कुफरी लवकर बदपुर व कायमगंज के पठारी इलाकों के साथ कमालगंज मोहम्मदाबाद के मैदानी क्षेत्र में भी हो सकती है। यह गर्मी के प्रति सहनशील लेकिन पिछेती झुलसा के प्रति संवेदनशील है। कुफरी गंगा पिछेती झुलसा के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। मध्यम सूखे की स्थिति के प्रति भी सहनशील है व इसकी भंडारण क्षमता अच्छी है। कुफरी मणिक के कंद लाल, गोले मध्यम व गहरी आंखों वाले व गूदा पीला होता है। इसकी भंडारण क्षमता अच्छी है। यह किस्म झुलसा की प्रतिरोधी है।

कुफरी मोहन के कंद सुंदर सफेद, अंडाकार, उथली आंखें व गूदा सफेद होता है। इसमें पिछेती झुलसा रोग के प्रति मध्यम प्रतिरोधकता है। कुफरी नीलकंठ खाने योग्य आलू की विशेष किस्म है। इसके कंद सुंदर रवेंगनी, अंडाकार व गूदा पीला होता है। इस में एंटी-आक्सीडेंट व कैरोटीनोइड्स प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इसमें पिछेती झुलसा रोग के प्रति मध्यम प्रतिरोधित है व भंडारण क्षमता अच्छी है। कुफरी संगम उच्च उपज देने वाली

प्रजाति	उत्पादन अवधि	औसत उपज
चिप्सोना 1	90-110 दिन	300-350
चिप्सोना 2	100-110 दिन	300-325
चिप्सोना 3	110-120 दिन	300-350
चिप्सोना 4	100-110 दिन	300-350
फाइसोना	110-120 दिन	300-350
बहार	100-110 दिन	300-350
ख्याति	70-90 दिन	250-300
पुखराज	90-100 दिन	350-400
लवकार	90-100 दिन	250-250
गंगा	100-110 दिन	350-400
मणिक	90-100 दिन	220-225
मोहन	90-100 दिन	350-400
नीलकंठ	90-110 दिन	350-380
संगम	90-110 दिन	350-400
सार	90-100 दिन	400-450

नोट- औसत उपज क्विंटल प्रति हेक्टेयर में।

प्रजाति है। जिसको प्रसंस्करण व खाने में उपयोग करते हैं। यह प्रजाति पिछेती झुलसा के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। कुफरी बहार गंगा के मैदान, पठार व पहाड़ियों के लिए उपयुक्त है।